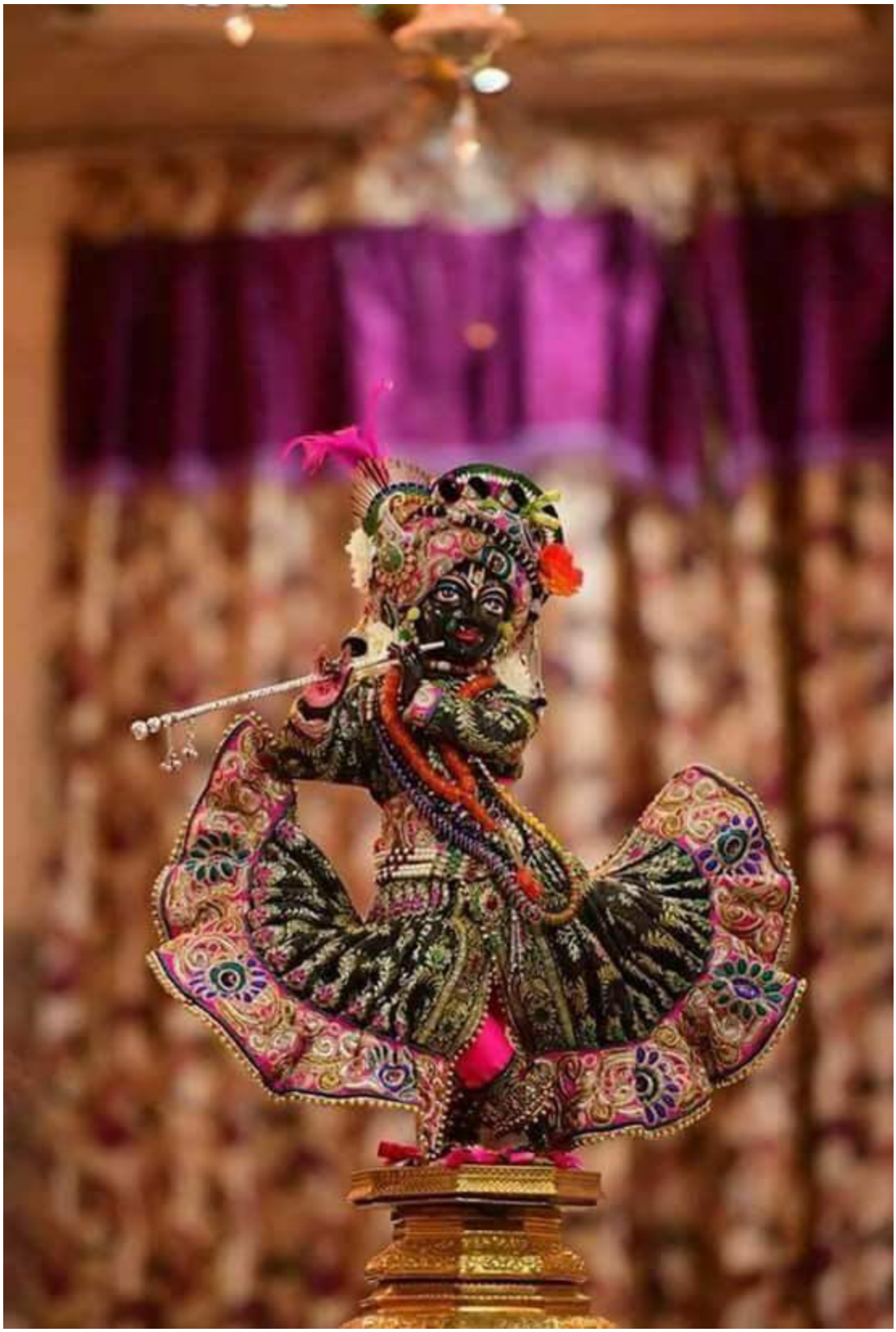

“जय श्री कृष्ण”

“केवल कृष्ण ही मेरी गति है”

"कृष्ण एव गति र्मम:"

ओहहह श्री वल्लभ!

ओहहह श्री यमुना!

ओहहह श्री गोवर्धन!

ओहहह श्री व्रज!

ओहहह श्री अष्टसखा!

ओहहह श्री मीरा!

ओहहह श्री सूरदास!

ओहहह श्री ब्रह्मांड के सारे तत्व!

ओहहह श्री जगत!

ओहहह श्री प्रकृति!

ओहहह श्री सृष्टि!

हम कितने भाग्यशाली है कि हमें यह भूमि, यह संस्कृति, यह स्पर्श, यह ज्ञान, यह भाव और पुष्टि सृष्टि मिली है।

श्री सुबोधिनिजी आधारित कृष्ण

द्वापर युग में अवतार धारण किए हुए श्री कृष्ण की लीला को श्री वल्लभाचार्यजी ने सारस्वत कल्प में अपने आपको श्री कृष्णमय हो कर अवतारी कृष्ण की लीला आधारित अनेक साकार स्वरूप श्री कृष्ण के मूर्ति स्वरूप में प्रकट किए। यही प्रकट रीति से श्री कृष्ण की लीला अति सूक्ष्म से मार्गसिंच कर श्री कृष्ण से विशेष श्री कृष्ण का श्री कृष्ण शुद्ध स्वरूप और अनगिनत तत्वों में से श्री कृष्ण तत्व ही अवतार श्री कृष्ण है, जो श्री कृष्ण के अनगिनत तत्वों का पदार्थ और वस्तुत्व को संयोजित करके अति समर्थ पुरुषोत्तम, महाकाल स्वरूप, भूमा स्वरूप भी समझाया है।

अवतार श्री कृष्ण की पहचान से ही शुद्ध श्री कृष्ण समझेंगे, शुद्ध श्री कृष्ण समझते ही परम शुद्ध श्री कृष्ण समझेंगे, परम शुद्ध श्री कृष्ण समझेंगे तो ही परंब्रह्म समझेंगे परंब्रह्म से कृष्ण तत्व समझेंगे,

कृष्ण तत्व से कृष्ण पदार्थ समझेंगे, कृष्ण पदार्थ से जिस जिस से कृष्ण पदार्थ संयोजित हो कर पुरुषोत्तम समझेंगे, पुरुषोत्तम से पूर्ण पुरुषोत्तम समझेंगे। यही है श्री सुबोधिनिजी का अति गूढ रहस्य, यही है श्री वल्लभाचार्यजी का पुष्टि प्रीत सेवा माधुर्य पार्दुभाव।

"कृष्ण एव गति र्मम" कौन कह सकता है?

जिसका चरित्र, जिसका जीवन, जिसका स्वाध्याय, जिसका संस्कार, जिसकी शिक्षा, जिसका धर्म, जिसका कर्म, जिसका विचार, जिसकी साँसे, जिसकी उच्छवासे, जिसकी द्रष्टि, जिसके अक्षर, जिसके स्वर, जिसके वचन, जिसका ज्ञान, जिसका भाव, जिसका स्पर्श, जिसका स्मरण केवल कृष्ण को साक्षात कर दे, वही परम श्रेष्ठ भगवदीय कह सकता है - **"कृष्ण एव गति र्मम"** ।

हमारा यह जन्म यह भूमि पर हुआ, हमारा जन्म यह कुटुंब मे हुआ, हमारा जन्म ये समाज में हुआ, हमारा संस्कार शिक्षण यह जगत में हुआ जो देश भूमि में कृष्ण आदि से आविर्भूत है, जो हमारे ऋषि मुनिओ, हमारे आचार्यों, हमारे संतो, हमारे भक्तों, हमारे वैष्णव भगवदीयों, हमारे पूर्वजो, और हमारे वर्तमान वैष्णव कुल दीपकों हमें सदा शिक्षित और सिंचित करते रहते है कृष्ण चरित्र से - वैष्णव सैद्धांतिक शास्त्रों से - वैष्णव सेवा निधि उत्सव - मनोरथ और सत्संग दर्शन से। जो हममें सदा पूरक रहे - कृष्ण ही एक ऐसा परम आत्मीय और आध्यात्मिक तत्व है जिसका स्मरण, जिसकी कर्म लीला स्पर्श, जिसका चिंतन, जिसका संकेत, जिसका संदेश, जिसका ज्ञान, जिसका भाव, हमें सही दिशा - सही मार्ग दर्शता - सही जीवन साक्षरता प्रदान कर सकती है। जिससे हमारा जन्म और जीवन मधुर और मधुराधिपति को सानिध्य स्पर्श पा सकता है। हमारी योग्य गति कर सकता है।

हाँ! यही तो सत्य है - इसीलिए तो हम सदा कृष्णमय होने की कोशिश करते रहते है।

आपको पता ही है -

यह मन क्या है?

यह मन श्री कृष्ण की बंसरी है। हमारा मन को हम श्री कृष्ण की बंसरी कर दे तो वो सदा मधुर ही पुकारेगी - गायेगी - बजायेगी।

यह तन क्या है?

यह तन श्री कृष्ण के वस्त्र है। हमारा तन को हम श्री कृष्ण के वस्त्र कर दे तो वो सदा सौंदर्य का आचल हो कर सदा मधुर स्पर्श से लहराएँगे। सदा सुंदर रंगो से सजाएँ, सुशोभित कर दे।

यह नैन क्या है?

यह नैन है श्री कृष्ण के ज्ञान और भाव है। जो हर अक्षर से और आंतरिक उतेजना से श्री कृष्ण को ब्रह्मांड में प्रकृति - सृष्टि में प्रकट कर दे।

यह नासिका क्या है?

यह नासिका है श्री कृष्ण की ऊर्जा है। जो हर पुष्टि पूंज से श्री कृष्ण की चेतना को तेजोमय कर दे।

यह अधर क्या है?

यह अधर है श्री कृष्ण की माधुर्य रसावली है। जो वचन वाणी से पुष्टि प्रीत कर्म के श्री सुबोधिनिजी सिद्धांत गाये और स्पर्श से श्री कृष्ण की माधुर्यता में पुष्टि समर्पण निखार भर दे।

यह मुखड़ा क्या है?

यह मुखड़ा श्री कृष्ण की लीला है। जो हर क्रिया से श्री कृष्ण को गोपाल - गोविंद - कृष्ण - कन्हैया - गोवर्धन - गिरधारी - श्याम - कान्हा - राधे कर दे।

यह हस्त क्या है?

यह हस्त है श्री कृष्ण का सखा है। जो हर साथ, हर संघर्ष, हर दान, हर कर्म निधि में श्री कृष्ण से अविचलित हो।

यह चरण क्या है?

यह चरण है श्री कृष्ण का पुरुषार्थ है। जो सदा विश्वास से योग्य दिशा में श्री कृष्ण के लिए गति करता है।

यह जन्म क्या है?

यह जन्म श्री कृष्ण का सेवक है। जो सदैव ब्रह्मांड के हर तत्व को विशुद्ध श्री कृष्ण पुष्टि तत्व करने में श्री कृष्ण की आज्ञानुसार पुष्टि प्रीत सेवा सिद्धांत से श्री कृष्णमय करता रहूँ।

यह जीवन क्या है?

यह जीवन है श्री कृष्ण का आचरण है। जो जो चारण लीला रची ऐसी ही हर गोवर्धन लीला में सदा श्री कृष्ण का एक हथथा बनूँ।

हमारे अष्टसखा श्री सूरदासजी का एक द्रष्टांत कह रहा हूँ।

एक बार एक शिष्य ने सूरदासजी को विनम्र पूर्वक कहा

हे गुरुजी! आपकी आँखें नहीं है फिरभी आप सबकुछ अनुभूत कर सकते हो, देख सकते हो, कैसे?

सूरदासजी ने कहा यही तो उर्जा है पुष्टि चिंतन और स्मरण की। आप सभी अपनी आँखों से जो देख लेते हो वही आँखों की नजर जब मुझ पर आती है तब ही मैं यह जगत, यह संसार को पहचानता रहता हूँ, जो तुम्हारी नजर से उठती उर्जा मुझे सबकुछ कहती है यह जगत ऐसा है, यह प्रकृति ऐसी है, यह सृष्टि ऐसी है, यह संसार ऐसा है।

जैसे जैसे मेरा पुष्टि चिंतन यही सब उर्जा से जुडता जाता है वैसे वैसे मेरे अंदर कृष्ण का साकार रुप धारण होता रहता है और मैं यह कृष्ण का जगत, यह कृष्ण की प्रकृति, यह कृष्ण की सृष्टि, यह कृष्ण का संसार, यह कृष्ण की लीला की अनुभूति करता हूँ। कितनी अनोखी बात सूरदासजी ने कहीं। हम देख कर भी कृष्ण की गति समझने की कोशिश करते रहते है, और ये अस्ठ्सखा बिन देखे भी सबकुछ अनुभव कर सकते है, ऐसे थे अष्ठ्सखा।

"कृष्ण"

कौन है कृष्ण?

क्यूँ श्री वल्लभाचार्यजी ने कहा **"कृष्ण एव गति र्मम"**

सिद्धान्तमुक्तावली में श्री वल्लभाचार्यजीने कहा

"परं ब्रह्म तु कृष्णो हि सच्चिदानंदकं बृहत्।

"परमानन्दरुपे तु कृष्णे स्वात्मनि निश्चय:।"

सूक्ष्म से सूक्ष्म, गहरा से गहरा चिंतन और आत्म तत्व का स्पर्श करके हम जानते और समझते जायेंगे तो शायद कृष्ण हमारी अंदर प्रकट हो जाय।

एक बालक अपने माता पिता से जन्म धरते ही अलग हो जाय।

एक बालक जो अपनी बाल क्रीडा में सत्य का प्रकाश फैलाये और दुष्टता का नष्ट करता चले।

एक बालक जो सौंदर्य, शृंगार, आनंद, सेवा, सन्मान से सृष्टि, प्रकृति, और जगत को योग्यता प्रदान करे।

एक बालक निर्दोषता, निर्मोहीता, निर्भयता और निर्मलता से सर्वत्र को आकर्षित करे।

एक बालक अपने माधुर्य से हर एक को अपना आनंद और प्रीत स्पर्श लूटाये।

एक बालक निडरता से अंधश्रद्धा को नष्ट करके योग्यता का मार्गदर्शन करे।

एक बालक व्यापार और व्यवहार की संपूर्ण संतोषजनक समांतर व्यवस्था प्रस्थापित करे।

एक बालक अपनी शौर्यता से भौगोलिक, प्राकृतिक, सांसारिक सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सुरक्षा करे।

एक बालक बाल्यकाल में बालकों से वडिलों तक को आज्ञाकिंत कर हर कक्षा के जीव समूह को सैद्धांतिक जीवन की साक्षरता सीखाये।

एक युवक अपनी हर अवस्था में सामाजिक, धार्मिक, न्यायिक, मापदंड और मार्ग प्रस्थापित करे।

एक युवक सदा जगत की हर सिद्धि से संसार के हर विघ्न को नष्ट करे।

एक युवक प्रीत की रीत को अगणित कला और संस्कृति से उजागर करे।

एक युवक अधर्म, अंधकार, अज्ञान, अभद्र, अहंकार, अराजकता का सर्वोत्तम नीति से धर्म, संस्कृति को विशुद्ध और पवित्र करे।

एक योध्दा रणभूमि में ब्रह्मांड, प्रकृति, सृष्टि और जीवन की सर्वोच्चता सार्थक करे।

एक आत्म तत्व - परमात्मा - स्वराट आत्मा से परंब्रह्म प्राप्त करे।

एक चरित्र जगत के हर जीव तत्व में अपनापन समाये।

एक चरित्र जगत के हर ज्ञानी, परम ज्ञानी, परम श्रेष्ठि को महाप्रभु पार्दुभावे।

एक परंब्रह्म जगत के हर अंश का अंगीकार करे।

एक प्रियतम सृष्टि के हर प्रेमी से प्रीत करे।

ओहह मेरे कृष्ण!

हर क्रिया संपूर्ण लीला में संयोजित हो जाये।

हर मार्गदर्शन जीवन की हर परिस्थिति को सुखमय कर दे।

एक संज्ञा संसार के हर व्यक्ति को धर्म योद्धा कर दे।

एक मित्रता से जगत को सर्वमित्र में परिवर्तन कर दे।

एक संकेत से अधर्म का नाश और धर्म का विजय लहरा दे।

एक चरित्र ने जगत में कितने अनोखे संप्रदायों को प्रस्थापित कर दिया।

एक चरित्र ने अनेक आचार्यों, अनेक संतो, अनेक भक्तों, अनेक यात्रा धामों, अनेक विशुद्ध श्रुतिओं, अनेक पवित्र ऋचाओं का प्राकट्य किया। अनेक प्रीत निकुंजो और समाधि स्थलों विस्फुलिंग किया।

सच कौन है कृष्ण?

आचार्य श्री शंकराचार्यजी ने कृष्ण को पुकारा

आचार्य श्री रामानुजाचार्यजी ने कृष्ण को पुकारा

आचार्य श्री निंबकाचार्यजी ने कृष्ण को पुकारा

आचार्य श्री माध्वाचार्यजी ने कृष्ण को पुकारा

आचार्य श्री वल्लभाचार्यजी ने कृष्ण को पुकारा

क्यूँ? क्या जताया ये चरित्र ने!

क्या सिंचा ये चरित्र ने!

क्या उजागर किया ये चरित्र ने!

क्या साक्षात किया ये चरित्र ने!

क्या साक्षर किया ये चरित्र ने!

क्या परिवर्तन किया ये चरित्र ने!

क्या तनुनवत्व किया ये चरित्र ने!

क्या संस्थाप्य किया ये चरित्र ने!

कैसे पार्दुभाव थे उनके जो जन्म धरते ही उन्हें

ये मिट्टी ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये आकाशने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये वायु ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये सूरज ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये सागर - नदी ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये माता-पिता ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये धर्म आचरण ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये संस्कृति ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये गुरुजी ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये शिक्षा ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये आचार विचार ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये क्रिया ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा,

ये गति ने उन्हें **कृष्ण** से जोडा।

मेरा भी जन्म हुआ यही मिट्टी में, तो मुझे भी यही सर्वे का थोड़ा कुछ स्पर्श हुआ और जानने लगा कृष्ण कोई है। मुझे भी सारे तत्वो ने मेरा ज्ञान भाव और संस्कार सिंचन से कृष्ण को कुछ कुछ जानने लगा।

बालक था तो घर में मुझे कृष्ण के शृंगार सजाते थे और कहेते रहते थे लाला! हे लाला! अर्थात - **कृष्ण**

थोड़ा समझता हु तो निहाला माता-पिता गृह सेवा करते थे, हवेली दर्शन जाते थे, सत्संग करते थे - **कृष्ण**

युवान हुआ तो दर्शन करने ले जाते थे, समझ देते थे, पाठ करवाते थे - **कृष्ण**

हर कक्षा में **कृष्ण** - हर शिक्षा में **कृष्ण** - हर संस्कार में **कृष्ण** - हर संकल्प में **कृष्ण**

माता-पिता द्रष्टांत दे - **कृष्ण** का

गुरुजी द्रष्टांत दे - **कृष्ण** का

सामान्यता से हर माध्यम सुने या पढे - **कृष्ण**

कोई प्रवास या यात्रा स्थली पहुँचे - **कृष्ण**

जहाँ भी हो - जहाँ भी पहुँचो - **कृष्ण**

जो भी है - जो भी हो - **कृष्ण**

सच कमाल की गति है ये **कृष्ण**

महाभारत का युद्ध चल रहा था, अर्जुन अपनी युद्ध विद्या श्री कृष्ण आज्ञांकित लड़ रहा था और श्री कृष्ण अपने चर्म चक्षु और आंतर चक्षु सदैव चारों ओर फैलाये रखते थे, इतने में उनकी द्रष्टि भिष्म पितामह पर पहुँची तो उन्हें भिष्म पितामह प्रणाम करते नजर आये, थोड़ी नजर दूसरी ओर घुमाई तो आचार्य द्रौण नजर आये तो वह भी उन्हें प्रणाम करते नजर आये, कृष्ण ने नजर पलटी और कर्ण की ओर पहुंचाई तो कर्ण भी उन्हें प्रणाम करते नजर आये। श्री कृष्ण सोचने लगे - ये कैसे? ये सब मुझे क्यूँ प्रणाम करते है? उन्हों ने सोचा - करते होंगे! इतने में उनकी नजर दुर्योधन पर पहुँची --- ओहह! दुर्योधन भी उन्हें प्रणाम करता हुआ नजर आया, वह अचंबित हो गये, अरे ये क्या? मैं क्या देख रहा हूँ? ऐसे ही नजर फिरते फिरते युधिस्थिर पर पहुँची तो वह भी श्री कृष्ण को प्रणाम करता नजर आया। अब कृष्ण को होने लगा की अब कुछ तो है? आसमान की ओर देखा तो मुस्कुराता हुआ, धरती पर देखा तो खिलती हुई, चारों तरफ से केवल आनंद ही आनंद प्रकट हो रहा था। कृष्ण सोचने लगे अरे ये युद्ध भूमि में ऐसा आश्चर्य! अपने नयन द्वार बंध किए तो अपने आंतर आत्मा से गूँज उठी - हे प्रभु! हे प्रभु! कृष्ण अपनी गहराई में झांखने लगे तो देखा की ब्रह्मांड के, जगत के, प्रकृति के, सृष्टि के, संसार के हर अंश उनसे खेलते थे, आनंद लूट रहे थे। युद्ध भूमि के हर एक जीवात्मा उनकी तरफ खींचे आ रहे थे।

ऐसी गति है श्री कृष्ण की!

काफी समझदार होने के बाद जानने लगा कृष्ण - समझने लगा कृष्ण, पर साथ साथ एक प्रश्न भी गति कर रहा था - **कौन है ये कृष्ण?**

एक वार्ता!

एक चरित्र!

एक आत्मकथा!

एक श्रद्धा!

एक विश्वास!

एक शक्ति!

एक विभूति!

एक देवता!

एक अद्रश्य अनुभूति!

एक परम चेतना!

आपने देखा है **कृष्ण** को?

आपने अनुभवा है **कृष्ण** को?

आपने छूया है **कृष्ण** को?

आपने गुनगुनाया है **कृष्ण** को?

आपने सोचा है **कृष्ण** को?

हाँ! कैसे?

आपको देखा तो **कृष्ण** को देखा

आपको अनुभवा तो **कृष्ण** को अनुभवा

आपको छूया तो **कृष्ण** को छूया

प्रकृति के साथ गुनगुनाया तो **कृष्ण** को गाया

एकांत मे बैठा तो **कृष्ण** को सोचा

कोई तो है ये कृष्ण जो मेरे साथ साथ है - कोई तो है कृष्ण जो मेरे साथ साथ मेरी गति करते है

कोई तो है कृष्ण जो मुझे मार्गदर्शन करते है - कोई तो है कृष्ण जो मुझे संस्कृत करते है

"एव" अर्थात "ज" अर्थात "एक यही ही"

आज के हमारे जन्म, आज की हमारी जीवन शैली, आज के हमारे धर्म पारायण, आज की हमारी शिक्षा पध्ध्ती, आज के हमारे संस्कार केंद्र, आज के हमारे कुटुंब हमें कहीं प्रकार के बंधन और रिवाज में बांध देते है, कहीं प्रकार की असमंजस में दाल देते है, कहीं प्रकार की मान्यता में फसा देते है। हम कोई भी समझ समझे वह समझ का हरेक के मन के मुताबित अलग अलग अर्थ होते है और समझते है। हम कोई विश्वास और निष्ठा पूर्वक कार्य करते है तो भी अलग अलग रीत से उन्हें देखा जाता है। क्यूँ ऐसा?

क्यूंकी हमारी मानसिकता, हमारी मान्यता, हमारी आवश्यकता, हमारी स्वीकार्यता, हमारी जागृतता, हमारी योग्यता, हमारी संकल्पता, हमारी द्रडता, हमारी जीवंतता, हमारी विश्वसनीयता, हमारी नियत, हमारी द्रष्टि, हमारी वृत्ति, हमारा तन - मन - धन, हमारी निपुणता, हमारी शिक्षा, हमारा माध्यम, हमारा भाव, हमारा ज्ञान, हमारा हेतु, हमारा सिद्धांत, सर्वे को हमने अलग अलग परिवेश से बांधा है।

मुझे तो दुख होता है, दर्द होता है, रोना आता है, दया आती है, घृणा आती है ऐसे जीवन से। जो नींद छुटते ही अंधेरा छाता है और जब पलके बंध करते है तो गहरा अंधेरा में डूब जाते है, अंधेरा ही अंधेरा।

ऐसे अंधेरों से निकलने के लिए ही हमारे परम प्रिये - परम श्रेष्ठ आचार्य श्री वल्लभाचार्यजी ने खुद के जीवन कृतार्थ से सिद्ध किया - **"कृष्ण एव गति र्मम"** जो हम इतने भाग्यशाली है की हम आज यही भूमि पर जो परंब्रह्म श्री कृष्ण की जन्म भूमि और कर्म भूमि रही ऐसे ही श्री वल्लभाचार्यजी की जन्म भूमि और कर्म भूमि भी यही रही और हम भी यही ही भूमि पर हमारा जन्म - जीवन - कर्म की गति उनके सानिध्य से, मार्ग दर्शन से सिद्ध करने की कोशिश कर रहे है।

हमारी संस्कृति, हमारे ब्रह्मर्षि, हमारे महर्षि, हमारे ऋषि मुनिओ, हमारे आचार्यो, हमारे संतो, हमारे भक्तो, हमारे आध्यात्म चरित्रों, हमारे शास्त्रों, हमारे काव्यो, हमारे संप्रदायों, हमारे साहित्यों, हमारे धर्मचार्यों, हमारे धर्म संस्थापनों अधिक से अधिक श्री कृष्ण - श्री कृष्ण ही कहते है और करते है।

कोई न कोई व्यक्ति को कुछ न कुछ पूछे तो वह येन केन प्रकार से अपनी योग्यता कृष्ण को माध्यम करते ही प्रमाणित करेगा। यही लाक्षणिक्ता है हमारी संस्कृति की।

कृष्ण जपे

कृष्ण पढे

कृष्ण पठ्ने

कृष्ण सोचे

कृष्ण पूजे

कृष्ण गाये

कृष्ण लिखे

कृष्ण आनंदे

कौन है ये कृष्ण? क्या कर रहा है ये कृष्ण?

कहीं संप्रदायों, कहीं संस्थानो, कहीं हवेलीओ, कहीं यात्रा स्थलों, कहीं उत्सवों, कहीं सेवाए, कहीं मनोरथों, कहीं सत्संगों, कहीं प्रवचनों, कहीं त्योहारों आदि को समझते हुए ऐसे निसकर्ष पर आ सकते है की कृष्ण हिंदू संस्कृति का पूर्ण पुरषोत्तम है।

परम मूल आचार्य श्रीवेद व्यासजी ने अनेक ग्रंथ की रचना की हर ग्रंथ में श्री कृष्ण को परमब्रह्म कहा है। श्रीमद भागवत की रचना ने ही उन्हें आत्मीय करार दिया।

पुष्टिमार्ग प्रणेता श्री वल्लभाचार्यजी अपने जीवन काल में स्थली स्थली श्रीमद भागवत का मुख अमृत का पान कराते थे और अक्षर अक्षर शब्द शब्द कारिका कारिका अपने आंतरिक ज्ञान और भाव लूटाते थे। श्री सुबोधिनिजी उनकी सर्वोच्च, सर्वोत्तम आत्मीय प्रीत अमृत अखंड वाणी श्री कृष्ण की सर्वज्ञ गुणातीत है, जो हर एक जीव तत्व के जीवों के लिए परंब्रह्म मधुरापति संयोजित सिद्धांत धात्री है, जो हर जीव तत्व की अलौकिक गति प्रदान करती है।

श्री वल्लभाचार्यजी मुखोंमित

“तत्कारण्म प्रधानपुरुषौ च, तस्यापी कारणमीश्वर: कल:,

तयोरपि नियन्ता पुरुषोत्तम एवेती कृष्ण एवोक्त: ।।“

श्री वल्लभाचार्यजी कहते है केवल श्री कृष्ण एक ही समस्त ब्रह्मांड में प्रधान पुरुष है। क्यूंकी श्री कृष्ण की हर गति हर मति हर नीति हर श्रुति हर प्रीति हर भक्ति हर निधि हर सिद्धि मधुरम है। महा विद्या मधु में मधुर रस एव मुख्य।

श्री कृष्ण ही परमो गति है। उनकी हर लीला सर्व श्रेष्ठ जीव तत्व से हर तत्व के लिए अति सामर्थ्यशिल है। जैसे हम जीवन कक्षा प्रणाली जीते है ऐसे ही उनके अवतार जीवन लीला को हम क्रमिक जीते जाये तो हम अवश्य श्री कृष्णो शरणोंन्मुख दासत्व धर सकते है, अपना जन्म सिद्ध कर सकते है, सहदेह हम उन्हें पा सकते है।

श्री कृष्ण का एक सखा है, वह सखा हर दिन चर्या में कृष्ण को पुकारे, हर रोज संकल्प करे

हे कृष्ण! मै अवश्य तुमने दर्शाये हुए पथ पर ही रहूँगा।

कृष्ण भी हर रीत से उनके साथ, हर रीत से उनके पास, हर नीति से उनके साथ, हर नीति से उनके साथ, हर कृति से उनके साथ, हर कृति के उनके पास, हर योग्यता से उनके साथ, हर योग्यता से उनके पास।

पर कोई परिस्थिति से वह सखा कृष्ण को भूल जाता था, पर थोड़ा समय में ही तुरंत कृष्ण को स्मरण भी कर लेता था। ऐसा ही सिलसिला उनके जीवन का चल रहा था।

कभी कभी जब अकेला बैठता था तब सोचता रहता था - कृष्ण मेरे साथ - मेरे पास है?

कभी कभी इतना डूब जाता था कृष्ण में की उन्हे ख्याल ही नहीं रहता था की मै कहा हूँ?

कृष्ण कृष्ण करता करता ही जीवन जी रहा था। कहीं बार चित्र विचित्र परिस्थिति आए और जाए कृष्ण को भूले और स्मरे पर जी रहा था। एक बार ऐसे ही वो अकेला बैठा था और सोचने लगा - नहीं नहीं

कृष्ण मेरे साथ नहीं है - कृष्ण मेरे पास नहीं है। क्यूंकी जैसे मैं जी रहा हूँ उन्हें मेरा इतना भी ख्याल नहीं है। अगर ख्याल होता तो मेरी परिस्थिति को वह सरल न कर देता?

इधर कृष्ण भी सोचने लगे मैं इनके साथ हूँ - मैं इनके पास हूँ तो भी उन्हें ऐसी वैसी परिस्थिति क्यूँ आती है और वह हैरान होता रहता है?

कृष्ण ने सोचा आज मै उनके साथ और पास ही रहता हूँ और हर तरह का ख्याल रखूँगा।

थोड़ी देर हुई सखा किसीसे कोई बात कर रहा था कृष्ण इनके नजदीक पहुँच कर उनकी बात सुनने लगे

सखा - भाई अभी तो मेरी हालत नाजुक है मै आपके काम नहीं आ सकता हूँ, मुझे कहीं जाना है तो मै तुम्हें पैसे नहीं दे सकता हूँ।

अरे भाई थोड़ा ही पैसा है, थोड़ी मदद करदों

नहीं नहीं मै नहीं कर सकता हूँ।

कृष्ण सोचने लगे सखा जो व्यक्ति से बात कर रहा था वो कौन है? अपनी रीत से देखा तो एक मित्र था सखा का, जो सरल था। कृष्ण सोचने लगे सखा क्यूँ ऐसा कह रहा था मेरी हालत नाजुक है और मै आपके काम नहीं आ सकता हूँ। ऐसा जूठ और ऐसी अव्यवहारू बात क्यूँ?

हाँ! अब पता चला की मेरे सखा की परिस्थिति बार बार ऐसी क्यूँ होती है!

ऐसे तो कैसे और कितने कृत्य और विचार करते है और करते रहते है की सखा ऐसे ही जीवन जीता रहता है मेरे साथ और मेरे पास रहने से भी, अर्थात मेरा होना न होना उनके लिए योग्य है और मेरा माध्यम केवल उनके सुख के लिए ही करता रहता है।

ओहह! मेरा सखा! क्यूँ ऐसा! मेरा इतना ख्याल रखते हुए भी वह ऐसा! यह कैसी रीत है? यह कैसी नीति है? मेरे कितने ही माध्यम ने उन्हें जागृत करता है की मैं उनके साथ हूँ - मैं उनके पास हूँ।

यह संस्कार

यह शिक्षा

यह धर्म

यह हवेली

यह सत्संग

यह प्रवचन

यह भजन

यह उत्सव

यह मनोरथ

यह सेवा निधि

यह दर्शन

यह शास्त्र

यह यात्रा

यह परिक्रमा

यह स्थली

यह त्योहार

यह संकल्प

यह ब्रहंसंबंध

यह तप

यह जप

यह पाठ

यह .....

कितना निकट हूँ इनसे वो कितना दूर है मुझसे

फिर भी मै दौड़ा रहता हूँ इनके लिए

जागता रहता हूँ इनके लिए

संभालता रहता हूँ उनके लिए

अंदर रहता हूँ इनके लिए

बाहर रहता हूँ इनके लिए

साथ रहता हूँ इनके लिए

फिर भी वो दूर भागता रहता है मुझसे।

मेरी हर लीला से मैं इनकी गति में हूँ।

अब समझ में आ रहा है की उन्हें चित्र विचित्र परिस्थिति क्यूँ आ रही है? वह हर विचार, हर उच्चारण, हर क्रिया, हर माध्यम गलत कर रहा था। सूक्ष्म से सूक्ष्म व्यवहार अयोग्य भरा था। उनकी हर गति में असैद्धांतिक ज्यादा मात्रा में थी जितनी मेरे उनके साथ और मेरे उनके पास की थी। मेरा कितना भी स्मरण करे, मेरा कितना भी चिंतन करे, मेरा कितना भी आह्वान करे, मेरा कितना उत्सव करे, मेरा कितना भी मनोरथ करे, मेरा कितना भी गुण गाये पर जो सत्य के सिद्धांत को तोड़े, सत्य के आधार को छोड़े, जो प्रीत के अमृत को विष करे, जो धर्म के आचरण में अवैधानिकता फैलाये तो वह जीव तत्व के जीव को अति विडंबना होगी ही, चाहे वह मेरा सखा होने से भी उन्हें सांसारिक त्रास ग्रस्त होना ही पड़ता है, उन्हें जागतिक ताप सहन करना ही होता है, उनकी गति में बार बार रुकावट पथराएगी क्यूंकी वह अपना मार्ग ही अवैधानिक तत्वों से घड़ता है, जो जो मार्ग हमारे आचार्यो, गुरुवर्यों, विशुद्ध भक्त जनों, सरल संत जनों ने सिंचा है वह मार्ग को ऐसे जीव तत्वों के जीव नष्ट कर देते है तब मुझे यही मार्गो को संस्थापन करके जीव तत्व के जीव की गति के लिए जन्म धारण करना पड़ता है।

कृष्ण की कितनी लीलाएं है, हर लीला जीवन के हर जीव तत्व के जीव को प्रेरणा देता है, सिंचन करता है, शक्ति देता है, मार्गदर्शन करता है, यथार्थ करता है, योग्य करता है, सत्य दर्शाता है, विश्वास संपादन करता है, एकैय करता है, गति करता है, मधुर करता है।

हमारे जीवन ने कहीं कृष्ण लीला सुनी, कही, समझाई जिसमे नाग दमन लीला एक अनोखी लीला है।

नाग दमन लीला - नाग का दमन करना - जो तत्व नाग का दमन करे वो पुरुषोत्तम है। जो नाग को नाथे वह तत्व श्री नाथ है। कौन है नाग? नाग हमारी लालसा है, नाग हमारी अपेक्षा है, नाग हमारी तृष्णा है। मथुरा में नाग ने ऐसी प्रचंडता फैलाई थी की हर व्यक्ति उनकी चुंगाल में, हर व्यक्ति उनकी आहोश में। नाग के होने से कोई भी जीव तत्व योग्य विचार नहीं कर सकता था, नाग के होने से कोई भी व्यक्ति कृतज्ञ नहीं हो सकता था, नाग के होने से व्यक्ति अस्पृश्य होता था, नाग के होने से व्यक्ति

निर्द्रष्ट होता था, नाग के होने से व्यक्ति संस्कारशून्य होता था, नाग के होने से व्यक्ति निर्लज्ज होता था। नाग के होने से व्यक्ति विकृत होता था। जो व्यक्ति नागपास से बंध गया वह व्यक्ति सदा के लिए अतृप्त, अर्ध चेतन, अर्धमृत, अघड़त हो जाता है। जिससे व्यक्ति, कुटुंब, समाज नपुशक हो जाता है। ऐसे व्यक्ति की गति मूर्छागति होती है, जिससे तोड़ना, जिसे नाथना, जिसे दमन करना कृतार्थता है। कृष्ण ने देखा हर समाज विषेला होता जा रहा है, नाग अपने बाहुपास मे समाज के उच्च व्यक्ति को भरड़ कर सर्वनाश कर रहा है। व्यक्ति और समाज का निम्नोथान हो रहा है, उन्हें कैसे स्वतंत्र किया जाय - नष्ट किया जाय - उद्धार लिया जाय - छोड़ दिया जाय - दूर किया जाय - हटाया जाय। यह है नाग दमन लीला। व्यक्ति और समाज में फैला हुआ अधर्म, अज्ञान, कुसंस्कार, असभ्यता, कुसंप, घृणा का जहरीला विष को शुद्ध करना ही मेरे जन्म की सार्थकता है, तो ही मेरा कर्म कर्मफल है, तो ही मेरा धर्म धर्म प्रदीप्त सूर्य है, तो ही मेरा हर अक्षर आनंद प्रवर्तक है, तो ही मेरा शिक्षण धर्म संस्थापक है, तो ही मेरा आह्वान ब्रह्म सलामत है, तो ही मैं ब्रह्म रक्षक हूँ, पालक हूँ, संचालक हूँ।

कृष्ण चरित्र की अलौकिक और अनोखी लीला में सर्वोपरि लीला **गोवर्धन लीला** है। कितना सामर्थ्य!

कितना सुरक्षित! कितना सर्वोच्च! कितना प्राथमिक! कितना सत्य चिंतनीय! कितना विवेकशील! वाह! अदभुत!

मुझे क्या क्या शिखाया

मुझे क्या क्या समझाया

मुझमें क्या क्या उजागर किया

मुझमें क्या क्या सिंचा

मुझे कितना सलामत बनाया

मुझे कितना सुरक्षित बनाया

मुझे कितना योग्य बनाया

मुझे कितना सामर्थ्यवान बनाया

मुझे कितना समृद्ध बनाया

मुझे कितना विशाल बनाया

मुझे कितना समाज सेवक बनाया

मुझे कितना कौटुंबिक चेतना स्त्रोत बनाया

संकट - तकलीफ़े - मुसीबते - अकल्पनीय परिस्थिति - असमंजस - दु:ख आदि तो जन्म और जीवन को सार्थक करने के सीमाचिन्ह है, जो पुरुषार्थ करते उन्हें नष्ट करना है - नाश करना है। बिना अडचण न जीवन - न वर्धन - न सर्जन - न गोवर्धन।

जो पुत्र - माता-पिता एक करें

जो भाई - भाई एक करें

जो कुटुंब - कुटुंब एक करें

जो कुटुंब - सगा स्नेही एक करें

जो कुटुंब - समाज एक करें

जो कुटुंब - कस्बा एक करें

जो कसबा - कसबा एक करें

जो कसबा - गाँव एक करें

जो गाँव - गाँव एक करें

जो मित्र - मित्र एक करें

जो सखी - सखी एक करें

जो सखी - सखा एक करें

जो सखा - सखा एक करें

जो प्रकृति - प्रकृति एक करें

जो सृष्टि - सृष्टि एक करें

जो साथ - साथ एक करें

जो हर अडचने दूर करें

यही सामर्थ्य है गोवर्धन लीला में

कृष्ण की लाक्षणिक्ता - कृष्ण की दीर्घ द्रष्टि - कृष्ण की कृतार्थता - कृष्ण की सर्वज्ञता यह गोवर्धन लीला से प्रमाणित होता है की छोटी उम्र में भी यह परम आत्मीय तत्व जगत के जीव तत्व को क्या क्या शिक्षित करता है? चारों ओर संकट के बादल छाये है, प्रकृति प्रकोप आक्रमित होता है, न कोई रास्ता - न कोई मार्ग - न कोई संकेत - न कोई आज्ञा मिलती है तब मानव अंधश्रद्धा में डूब कर गलत क्रिया - अयोग्य रीत अपनाता है और जीवन में लंबे समय के लिए अनेक प्रकार की अडचने में फस जाता है जो आखिर तक नहीं निकल पाता है।

ऐसी परिस्थिति में कृष्ण जागृत करता है।

जो अपने निकट है, जो अपने के लिए अपनापन है, जो अपने को संरक्षित करता है, जो अपने का पोषण करता है, जो अपने के साथ सदा निभाता है, जो अपने को उरगा प्रदान करता है। जो है गोवर्धन - जो हम अंधश्रद्धा में उन्हें पहचान नहीं पाये वो कृष्ण ने उजागर किया। गोवर्धन अपने को अन्न देता है, गोवर्धन अपनी गऔ को सुरक्षित और गऔचारण देता है, गोवर्धन अपने को जल प्रकोप से संरक्षित करता है, गोवर्धन अपने को दुश्मन से बचाता है। यही तो अपना योग्य देव है जो सदा हमारी निकट रहता है। यही तो पूजनीय है तो हम उनकी ही पूजा सेवा और आराधना करें यही उचित है। जो हमारे परम श्रेष्ठी भगवदीय है।

ओहह! गोवर्धन! हर कक्षा से प्रणाम!

यह है कृष्ण

जो मेरे साँस को उर्जावान करे

जो मेरे मन को स्थितिप्रज्ञ करे

जो मेरे तन को विशुद्ध करे

जो मेरे धन को सुयोजित करे

जो मेरे विचार को शिक्षित करे

जो मेरे क्रिया को विकसित करे

जो मेरे उच्छ्वास को पवित्र करे

जो मेरे स्वर को मधुर करे

जो मेरी दृष्टि को समद्रष्ट करे

जो मेरी नजर को अनपेक्षित करे

जो मेरे रोम रोम को सेवक करे

जो मेरे भाव को प्रीत रस करे

जो मेरे स्वभाव को अहंकार विमुक्त करे

जो मेरी धडकन को गोपि करे

जो मेरे आत्मा को स्वराट आत्मा करे

जो मेरे स्पर्श को अवेदनिय करे

जो मेरे अश्रु को यमुना करे

जो मेरे तन को गोवर्धन करे

जो मेरे लहू को व्रज करे

जो मेरे जीवन को वनस्पति करे

जो मेरे अंश को वल्लभ करे

जो मेरे अक्षर को अष्टसखा करे

जो मेरे गीत को कीर्तन करे

जो मेरे चरित्र को गौवा करे

जो मेरे धर्म को पुष्टि सिद्धांत करे

जो मेरे कर्म को गौचारण करे

जो मेरे वंश को वैष्णव करे

जो मेरी प्रीत को राधा करे

चीर हरण लीला

जल - स्त्रियाँ और समाज व्यवस्था

जल संसार है, जल में अनेक प्रकार के तत्व है। जो तत्व के स्पर्श से मनुष्य अपनी जागृतता और कुशाग्रता से खुद को योग्य करता रहता है। अगर वह यह तत्व को सिद्ध करदे तो वह यह संसार तैर गया, अगर वह यह तत्व को न सिद्ध कर पाया तो वह डूब गया।

गोपियाँ जल में स्नान कर रही थी अर्थात संसार में थी। जो जो भी क्रिया और क्रीडा कर रही थी उनमें न तो कोई डर था, न कोई संकोच था, न कोई मर्यादा थी। वह अपने आप में खो गई थी और जल में मग्न हो गई थी।

कान्हा ने सोचा

यह नारी तत्व को

पुरुष - पुर का अर्थ है शरीर, तन और उष का अर्थ है प्रवेश । हम कैसे कैसे पुरुष है?

एक पुल्लिंग शरीर दूसरा स्त्रीलिंग शरीर। यह दोनों शरीर ही अहंकार का मूल है।

कृष्ण तो केवल सात बरस के होंगे और यह उम्र लौकिकता से सभर नहीं है और यही उम्र में उनकी यह लीला समाज में नारी का महत्व क्या है वह स्त्री को समझाते है। यह देह लोलुपता का नहीं है, यह देह अश्लील नहीं है, यह देह काम वासना सभर नहीं है, यह देह कोई ऐसा साधन नहीं है जो राग और रोग से ग्रस्त हो। यह शरीर तो पुरुषार्थ का साधन है, शृंगार सज के कला का विकास है, चुस्त और सुसज्जित रख कर संस्कारिक कार्य करने के लिए है। जो समाज और संसार की अंधकार और अभद्र व्यवहार तोडने के लिए है। स्त्री कोई खेल और वस्तु साधन नहीं है जो व्यवहार में उपयोगिता धरे।

स्त्री का हर अंग उपांग मातृत्व और सखीत्व का निर्देश करता है। जो समाज का अहंकार तोडने में मददरुप होता है।

गोपियों की प्रीत पर इन सबमें कृष्ण का आकर्षण अति अलौकिक था। कैसा आकर्षण!

हर गोपि हर अंग अंग से,

हर गोपि खुद का मन से,

हर गोपि खुद के सार्वभोमत्व से,

हर गोपि खुद के चित्त से,

हर गोपि खुद के ख्याल से,

हर गोपि खुद के कार्य से,

हर गोपि खुद की डोर से,

हर गोपि खुद की बुद्धि से,

हर गोपि खुद के दासत्व से,

हर गोपि खुद की पहचान से,

हर गोपि खुद की कक्षा से,

हर गोपि खुद की सत्यता से,

हर गोपि योग्य संस्कार से,

वैसे ही श्री कृष्ण ने चीर हरण लीला से उन्हें अर्थात समाज को जागृत किया की यह स्त्री देह की लोलुपता, यह स्त्री देह का आकर्षण, यह स्त्री देह का व्यवहारी करण मिथ्या है। तो है स्त्री देह धारी तत्व आपको खुद में और समाज में ऐसी जागृतता व्यापक करनी है जिससे समाज तेजोमय बने, संसार संस्करमय बने और यही सर्वोच्चता है यह स्त्री अंग और शरीर धारण करने की, जिससे पुरुषोत्तम तुमसे पूर्ण हो जाय।

महाभारत में एक स्त्री का चीर पुरते है और यह छोटी उम्र में स्त्रीयों के चीर हरण करते है। कितनी शुद्ध और संस्कारितता जतायी है - जिससे हर प्रकार की स्त्री का सन्मान हो, पवित्रता हो, योग्यता हो।

संसार और जगत की जो संस्कारी, सर्वोच्च और योग्य द्रष्टि है वह तो हर जीव तत्व उत्तम है और हर अंश शुद्ध अंशी का रुप है।

पर बढते अज्ञान, अंधकार, असमंजस, अराजकता, अन्याय, अन्याश्रय, अश्लीलता, अशुद्धता सर्वत्र खंडित कर देती है तब .....

नारी अर्थात स्त्री जो मन से, जो तन से, जो बंधन से, जो लज्जा से, जो भय से, जो उद्वेग से, जो अपेक्षित वृत्ति से और अभिमान - अहंकार के आवरण से - परिवेश से खुद को शर्मसार करती रहे तो

यह संसार असार हो जाता है,

यह जगत असुर हो जाता है,

यह प्रकृति निर्लज्ज हो जाती है,

यह धरती रस विहीन हो जाती है,

यह सृष्टि कुसृष्टि हो जाती है,

यह कृति अर्थ विहीन हो जाती है,

यह मति कुमति हो जाती है,

यह रीति कपट हो जाती है,

यह नीति अनीति हो जाती है,

यह प्रीति अविश्वसनीय हो जाती है,

परतंत्र हो जाती है,

अशुद्ध हो जाती है,

असत्य हो जाती है,

निष्ठुर हो जाती है,

अंधकारमय हो जाती है,

अज्ञानी हो जाती है,

हम जीव तत्व ऐसा समझते है और मानते है की हमें मुक्ति पा नी है तो हम सदा प्रभु स्मरण, प्रभु शरण और प्रभु चरण रहने से पा लेंगे. ..... नहीं नहीं हमें मुक्ति कहीं प्रकार की पा नी है -

जैसे

मनुष्य देह से

मनुष्य मन से

मनुष्य चित्त से

मनुष्य वृत्ति से

मनुष्य विकार से

मनुष्य अहंकार से

और यह मुक्ति हम पा सकते है केवल और केवल सत्य प्रीत से और यह प्रीत न तो स्त्री से होती है, न तो धन से होती है, न तो वासना की पूर्ति से होती है। इसके लिए ही हमें स्त्री को स्त्री नहीं पर स्त्री को पौरुष युक्त शक्ति और साथी समझें तो हम पुरुषोत्तम पा सकते है।

इसलिए तो श्री यमुनाजी को हमसे जोडा है।

रास लीला को क्या समझे!

क्या हम इतने ना समझ है की इतनी सारी गोपियाँ और कान्हा अकेला!

एक एक गोपि के साथ एक एक कान्ह कैसे प्रकट भये!

यही तो सिद्धांत है हमारी संस्कृति का जो एक श्याम हर एक श्याम।

ऐसे है कृष्ण।

"गति"

गति का पुष्टि संस्कृत अर्थ है - शरण स्थान पहुँचने के लिए जो तीव्रता है उन्हें गति कहते है।

गति का सामान्य अर्थ है - प्राप्त करने के लिए जो तीव्रता है उन्हें गति कहते है।

श्री वल्लभाचार्यजी कहते है - **"कृष्ण एव गति र्मम"** अर्थात उनकी द्रष्टि और ज्ञान भाव से गति - शरण स्थान पहुँचने की तीव्रता को गति कहते है। श्री सुबोधिनिजी आधारित गति श्री वल्लभाचार्यजी ने पायी केवल श्री कृष्ण में। श्री कृष्ण चरित्र से श्री वल्लभ ने पाया श्री कृष्ण का शुद्ध श्री कृष्ण स्वरूप, श्री कृष्ण की हरेक लीला थी ही समझ पाये श्री कृष्ण के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व स्वरूप और श्री कृष्ण के तत्व स्वरूप से पहचाना श्री कृष्ण का पदार्थ स्वरूप। जो श्री वल्लभाचार्यजी ने अपने हर ग्रंथ मे सिद्ध किया

है। इसीलिए तो पुष्टि मार्ग के श्री वल्लभाचार्य विरचित हर स्त्रोत्र, हर अष्टक, हर पद, हर मुकतावली, हर ग्रंथ अति गूढ़ता सभर, प्रज्ञान सभर परंब्रह्म सैद्धांतिक ब्रह्मांड संक्रमण है। जो हर तत्व से तत्व का संयोजन - परिवर्तन से जो तनुनवत्व प्रकट होता है अर्थात सिंचन होता है अर्थात परिवर्तन होता है उससे ही हमारा तत्व श्री कृष्ण की ओर गति कर सकते है, जुड़ सकते है, एकैय कर सकते है, एकात्म कर सकते है। यही ही पुष्टि मार्ग का सत्य है। यही श्री वल्लभ के अस्ठ्सखा है। यही श्री वल्लभ के अस्ठ्सखा का पार्दुभाव कीर्तन लीला है। यही ही श्री वल्लभाचार्यजी की पुष्टि सेवा प्रीत निधि है। यही श्री वल्लभाचार्यजी के श्री कृष्ण निधि स्वरूप है। यही श्री वल्लभाचार्यजी की ८४ बैठकजी है। यही श्री पुष्टि मार्ग के ८४ और २५२ वैष्णव है जिन्होंने प्रमाणित किया **"कृष्ण एव गति र्मम"** ।

हमारा मूल स्थान है शुद्ध श्री कृष्ण और हम है एक अंश जो जो हमने धारण किया है वही श्री कृष्ण ने साकार रूप धारण करके सिद्ध किया है। जो हमे सर्वोच्च और सर्वोत्तम मार्गदर्शन और दिशा सूचक रहता है। हमारे हिंदू संस्कृति के सर्वे आचार्यो ने सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान और रीत खुद की अनुभूति पा कर हमारे लिए संस्कृत किया है। यही हमारा भाग्य है, तो हम क्यूँ न यही सूत्रता को हममें उजागर करके हम भी हमारे वर्तमान और भविष्य के लिए कहे - "कृष्ण एव गति र्मम" ।

सर्वसामर्थ्यसहित: सर्वत्रैवाखिलार्थकृत: ।

शरणस्थसमुद्वारम कृष्णम विज्ञापयाम्यहम ।।

कृष्णाश्रयमिंदम स्त्रोत्रम य: पठेत कृष्णसन्निद्यो।

तस्याश्रयो भवेत्कृष्ण इति श्रीवल्लभोव्रवीत।।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"